I. STATUTORY RESOLUTION SEEKING DISAPPROVAL OF THE REPRESENTATION OF THE PEOPLE (AMENDMENT) ORDINANCE, 1991

II. THE REPRESENTATION OF THE PEOPLE (AMENDMENT) BILL, 1991.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया (बिहार) : उपसभापति महोदया, मैं आपकी अनुमति से यह संकल्प उपस्थित करता हूं।

"यह सभा राष्ट्रपति द्वारा 18 अप्रैल, 1991 को प्रख्यापित लोक प्रतिनिधित्व (संशोधन) अध्यादेश, 1991 (1991 का संख्यांक 2) का निरनुमोदन करती है।"

यदि इजाजत हो तो मैं लंच के बाद बोलूंगा।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now the House stands adjourned for lunch.

The House then adjourned for lunch at thirty minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at thirty-three minutes past two of the clock.

[**The Vice-Chairman (Shrimati Jayanthi Natarajan**) in the Chair]

THE BUDGET (RAILWAYS), 1991-92

THE MINSTER OF STATE IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI M. MALLIKARJUN): Madam, I beg to lay on the Table a statement (in English and Hindi) of the estimated receipts and expenditure of the Government of India for the year 1991-92, in respect of Railways.

I. STATUTORY RESOLUTION SEEKING DISAPPROVAL OF THE REPRESENTATION OF THE PEOPLE (AMENDMENT) ORDINANCE, 1991

II. THE REPRESENTATION OF THE PEOPLE (AMENDMENT) BILL, 1991—Contd.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया (बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदया, हम इस समय लोक प्रतिनिधित्व (संशोधन) अध्यादेश, 1991 पर विचार करने के लिए उपस्थित हुए हैं। हमने पिछले दिनों भारत के इतिहास में एक ऐसा चुनाव देखा जो शायद सदियों तक भारत का जनमानस भुला नहीं पाएगा। किस तरह से इस चुनाव में अपराधी तत्व, देशद्रोही तत्व और विदेशी तत्व सक्रिय रहे और विश्व की एक मानीजानी जनतांत्रिक मशीनरी को खराब करने की कोशिश की गई, वह किसी से छिपा हुआ नहीं है। जब हम इस विधेयक पर बात करने के लिए सोचते हैं...

तो उस वक्त याद आती है अपने पूर्व पुरुषों की बातें कि आखिर पूर्वजों ने किस गणतांत्रिक अधिकार देने की बात सोची थी और किस गणतांत्रिक भारत को बनाने की बात सोची थी। इस गणतांत्रिक भारत को एक बहुत ही सुलझा हुआ संविधान उन्होंने दिया था और उस संविधान के माध्यम से हम सब को, इस मुल्क के 85 करोड़ जनता को कुछ अधिकार दिये थे। पर जब उन अधिकारों का दुरुपयोग होने लगा, जब उन अधिकारों को अपनी खुशी के लिये या अपनी सत्ता को बचाये रखने के लिए उसका प्रयोग होने लगा तो इससे इस मुल्क की जनता रोती है और इस मुल्क का दुर्भाग्य भरा इतिहास इस मुल्क की जनता लिखती है। जब आने वाली पीढ़ियां इस इतिहास को पढ़ेंगी तो वह इस कलंकित इतिहास को पढ़कर याद करेंगी कि किस तरह से इस मुल्क की आजादी के लिये उस समय के लोगों ने फांसी का फंदा हंसते हंसते चूमा। कहां है भगत सिंह कि सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजुये कातिल में है, कहां वह भगतसिंह कि मेरा रंग दे बसंती चोला कहां वह विनय बादल दिनेश और कहां वह खुदीराम बोस जो यह कहते कहते फांसी के फंदे पर चढ़ गया कि :

"एक बार बिदाय दे मां
घुरे आसी
हांसी हासी पोरबो फांसी
देखबे जगत बासी
एक बार बिदाय दे मां"